ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 1 कुल पृष्ठ-8 20 से 26 जुलाई, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 श्रा. कृ.-11

हरियाणा के ऐतिहासिक स्थल लौहारु में लगभग पांच हजार युवक व युवतियों ने लिया संकल्प

समाज और देश के निर्माण में संस्कारित बच्चे देते हैं महत्त्वपूर्ण योगदान

– स्वामी आर्यवेश

जीवन को उच्च बनाने के लिए यम-नियम का पालन हर धर्म के व्यक्ति को करना चाहिए

– शक्तिपाल आर्य

भिवानी जिले के लौहारु के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 15 जुलाई को संस्कार संकल्प समारोह का आयोजन खण्ड के सभी निजी व सरकारी विद्यालयों द्वारा किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी श्री शक्तिपाल आर्य ने की। प्राचार्य पृथ्वी सिंह श्योराण ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने विभिन्न स्कूलों से आए विद्यार्थियों, अध्यापकों आदि का आह्वान किया कि वे सच्चाई, ईमानदारी, देशभक्ति, गुरु भक्ति, नैतिकता, समाजसेवा और माता–पिता की भक्ति जैसे संस्कारों को अपने जीवन में ढालें।

स्वामी आर्यवेश जी ने विद्यार्थियों को नशाखोरी, कन्याभ्रूण हत्या, अश्लीलता, अंधविश्वास, से दूर रहने तथा स्वच्छता,पौधारोपण जैसे सद्कर्मों सहित अच्छे संस्कार अपनाने का संकल्प दिलाया।

लौहारु खण्ड में प्रथम,दूसरे व तीसरे स्थान पर रहने वाले मेधावी छात्र–छात्राओं को स्वामी आर्यवेश जी, शक्तिपाल आर्य, बिरजानंद एडवोकेट, धर्मपाल एडवोकेट,रामवतार आर्य ने सम्मानित किया।समारोह में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि बच्चों को ठीक समय पर उच्च संस्कारों से परिचित करवाना जरूरी है। इससे उनके जीवन का निर्माण होगा। उन्हें नैतिकता, ईमानदारी, गुरू व देश भक्ति, माता–पिता की भक्ति करने आदि संस्कारों का पाठ छात्र जीवन में ही पढ़ा दिया जाए तो वे बड़े होकर जिस क्षेत्र में भी जाएंगे, देश और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

23 जुलाई जयन्ती पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष – चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के

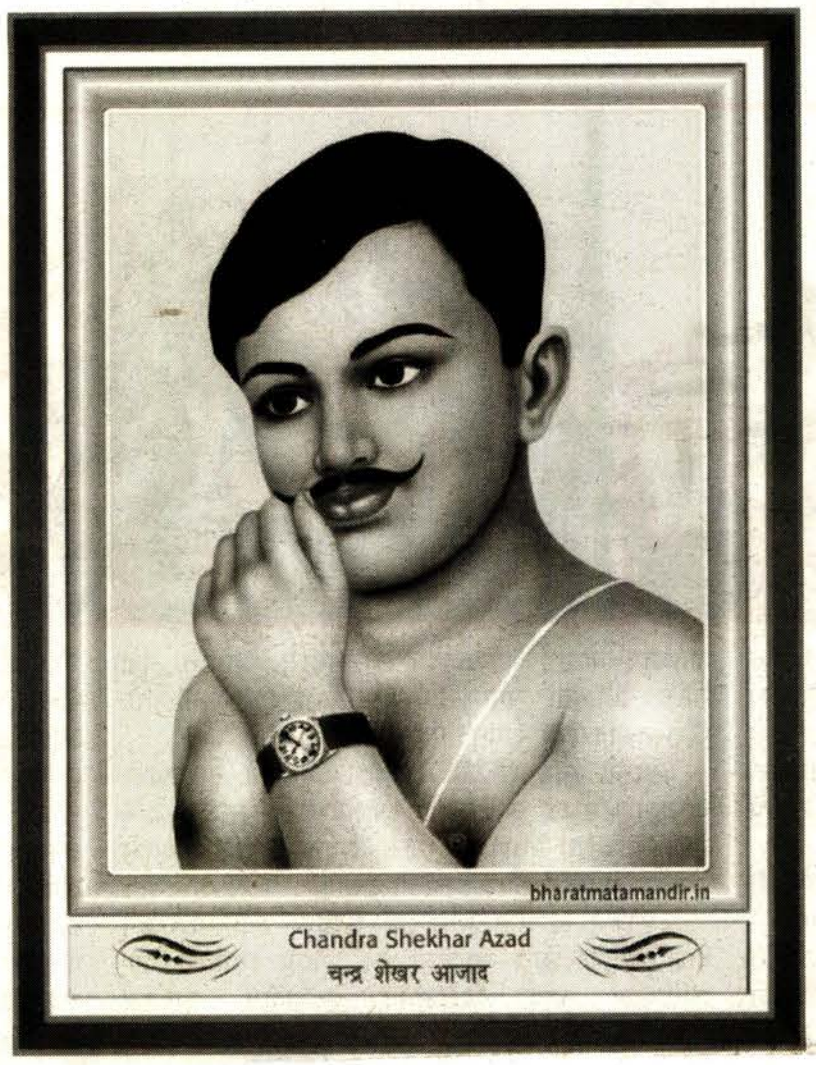

Chandra Shekhar Azad
चन्द्र शेखर आजाद

बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

शिक्षा को बाजार भरोसे मत छोड़िये

– अनिल सद्गोपाल

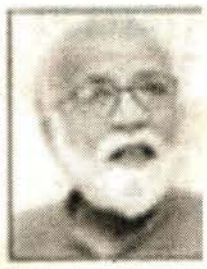

शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण के बढ़ते दखल ने वंचित और दलित तबकों की शिक्षा पर सबसे ज्यादा असर डाला है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश के कुल 18 प्रतिशत छात्र ही 12वीं कक्षा तक पहुंच पाते हैं। दलित और आदिवासी छात्रों के मामले में यह प्रतिशत क्रमशः आठ और छह है तथा अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग के छात्रों में दस है आगे ऐसी व्यवस्था को बढ़ावा न मिले, इसके लिए जरूरी है कि मौजूदा सरकार समान स्कूल व्यवस्था की नीति अपनाए। हमारे संवैधानिक मूल्य भी इस बात पर फोकस करते हैं कि सबको समान शिक्षा मिले।

शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण के बढ़ते दखल ने वंचित और दलित तबकों की शिक्षा पर सबसे ज्यादा असर डाला है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश के कुल 18 प्रतिशत छात्र ही 12वीं कक्षा तक पहुंच पाते हैं। दलित और आदिवासी छात्रों के मामले में यह प्रतिशत क्रमशः आठ और छह है तथा अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग के छात्रों में दस है आगे ऐसी व्यवस्था को बढ़ावा न मिले, इसके लिए जरूरी है कि मौजूदा सरकार समान स्कूल व्यवस्था की नीति अपनाए। हमारे संवैधानिक मूल्य भी इस बात पर फोकस करते हैं कि सबको समान शिक्षा मिले दसवीं और बारहवीं के परीक्षा परिणाम करीब–करीब सभी बोर्डो के आ चुके हैं। पिछले महीने भर से विद्यार्थी इसे लेकर तनाव का सामना कर रहे थे। पर क्या आपको लगता है कि हमारे छात्रों के सिर से परीक्षा का भूत खत्म हो गया है। शायद नहीं। इस मामले में एनसीईआरटी और सीबीएसई की कोशिशें एक हद तक ही कामयाब हो पाई हैं। जब तक सरकार की शिक्षा नीति में बदलाव नहीं होता, ऐसी समस्याओं से मुक्ति नहीं मिलने वाली। रिजल्ट के बाद भी बच्चे बेहतर शिक्षण संस्थानों, स्कूल–कॉलेजों में दाखिले की होड़ में तनावग्रस्त होते हैं। बच्चों के सामने यह टेंशन भी है कि कैसे अपने मनपसंद सब्जेक्ट को लिया जाए। दाखिले का सिस्टम ऐसा है कि 80– 85 अंक लाने के बावजूद आप एक तथाकथित अच्छे कॉलेज में अपने पसंद के विषय में दाखिला नहीं ले सकते।

सवाल यह है कि ऐसी स्थिति क्यों आई है?दरअसल हमारी सोसाइटी में प्रतिभा की समझ ही नहीं है और न ही शिक्षण व्यवस्था इस बात की पहल करती दिख रही है कि हम प्रतिभा का सही मूल्यांकन कर पाएं और प्रतिभाशाली बच्चों को सही राह दे सकें। दूसरी ओर सरकार की शिक्षा नीति ऐसी है कि वह योग्य शिक्षक की व्यवस्था भी नहीं कर पा रही है। फिर एडमिशन के लिए तय हमारे मानक में, जो सही एजुकेशन सिस्टम के अभाव में उपजे हैं कहीं न कहीं खामियां हैं। इसमें नंबरों की ऐसी होड़ को बढ़ावा मिला है जो अनुचित है तथा प्रतिभा के गलत आकलन को बढ़ावा देती है। फिर इससे राज्य बोर्ड के छात्र वैसे विश्वविद्यालयों में दाखिला नहीं ले पाते जहां अंकों के आधार पर नामांकन होता है। कई राज्य बोर्ड के टॉपर छात्र दिल्ली विवि के हिंदू, सेंट स्टीफन और करोड़ीमल जैसे कॉलेजों में अधिकांश विषयों में दाखिला नहीं ले पाएंगे। जाहिर है, यह उनकी प्रतिभा का असम्मान है लेकिन सोचने योग्य बात है कि इसके लिए आप दोष किसी विश्वविद्यालय के प्रबंधन को नहीं दे सकते। प्रतिभा को लेकर मजाक सी बनती इस स्थिति से बचने के लिए जरूरी है कि राष्ट्रीय स्तर पर एक ही तरह की शिक्षा हो या अंक देने का सिस्टम सभी जगह समान बनाया जाए। देश भर में विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा में सुधार हो ताकि हर राज्य के प्रतिभाशाली छात्रों को अपने क्षेत्र में ही अच्छी सुविधा युक्त शिक्षा हासिल हो सके। दिल्ली विश्वविद्यालय की बात करें तो यहां भी पांच–छह कॉलेजों में ही नामांकन की आपाधापी मचती है जबकि यहां करीब 80 कॉलेज हैं। यह भी गौर करने वाली बात है कि उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालयों का अभाव है और यह कमी कम से कम दोगुने विश्वविद्यालय खोल कर ही पूरी की जा सकती है। वैसे केंद्रीय विश्वविद्यालय में कॉलेज की संख्या बढ़ाना भी एक विकल्प है लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता का ख्याल रखना होगा।

फिर हमें यह भी समझना होगा कि शिक्षा को लेकर हम किस रास्ते पर जा रहे हैं?सिर्फ साक्षर बनना ही काफी नहीं और न ही सिर्फ 90 प्रतिशत नंबर लाना। असल चीज ज्ञान आधारित समाज है। ऐसा समाज, जहां समतामूलक शिक्षा हो। वह सबको हासिल हो और हर तरह की प्रतिभा को समान तौर पर विकास का अवसर मिले। सरकार ने तो शिक्षा को बाजार के भरोसे छोड़ दिया है। शिक्षा जगत में लगातार निजी हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है। यूनेस्को की जिस रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया में सबसे ज्यादा वयस्क निरक्षर भारत में हैं, वह उस सच की ओर इशारा करती है जिधर देखना भी सरकारी तंत्र को गवारा नहीं। रिपोर्ट में इस पर खास फोकस किया गया है कि अमीरों और गरीबों के बीच शैक्षणिक स्तर पर गहरी विषमता है। जो यह सोच रहे हैं कि रिपोर्ट तो वयस्क निरक्षरों पर है, वे गफलत में हैं। यूनेस्को की रिपोर्ट के अलावा भी

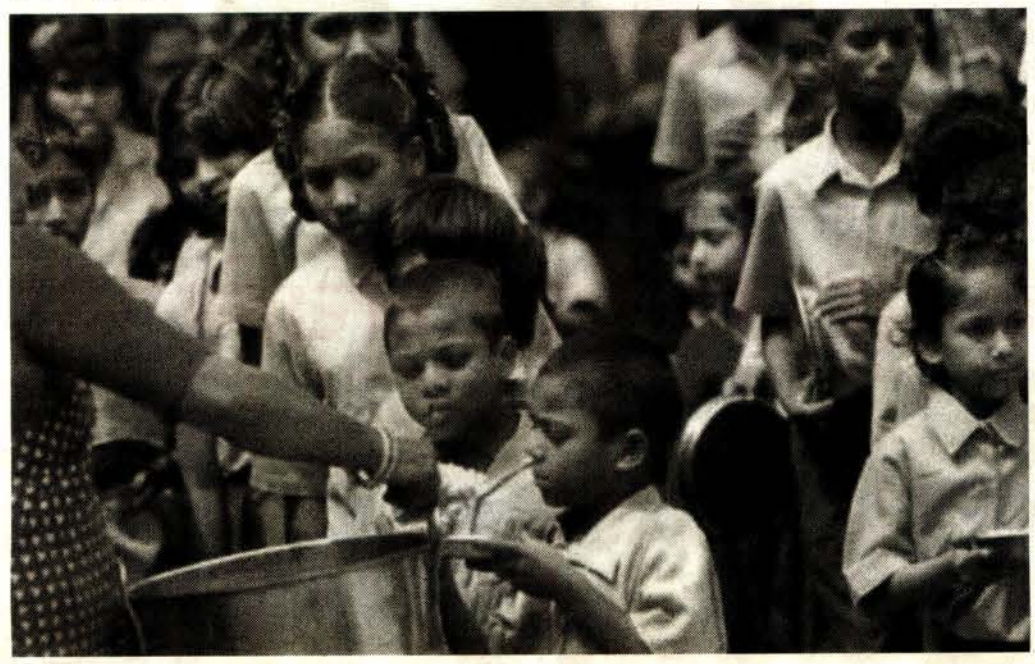

समय–समय पर की गई अध्ययन रिपोर्ट बताती हैं कि शिक्षा की हालत कैसी है। आज बिहार जैसे राज्यों में स्कूलों से ड्राप आउट की दर 38 प्रतिशत है। झारखंड में तो यह दर 42 प्रतिशत है। महाराष्ट् जो इस मोर्चे पर सबसे अव्वल है, वहां भी 15 प्रतिशत छात्र पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। सरकारी स्कूली शिक्षा ध्वस्त हो रही है और निजी स्कूलों को बढ़ावा मिल रहा है। निजी स्कूल पैसे के पीछे पड़े हैं इसलिए कइयों के लिए वहां दाखिला ले पाना दूर की कौड़ी है।

शिक्षा की दुनिया की विसंगतियां दूर करनी हैं तो समान शिक्षा प्रणाली लागू करनी ही होगी। सरकार की दोहरी शिक्षा प्रणाली से भारत और इंडिया का विभाजन साफ दिखने लगा है। यह खाई ज्यों–ज्यों गहरी और चौड़ी होगी, अनेक समस्याएं खड़ी करेंगी। समाज में आक्रोश बढ़ेगा और लोग उग्र कदम उठाने से भी नहीं हिचकेंगे। यूनेस्को की एजुकेशन फॉर ऑन ग्लोबल मॉनीटरिंग रिपोर्ट 2013–14 बताती है कि हमारे देश में स्कूल जाने के बावजूद 90 प्रतिशत बच्चे कुछ नहीं सीख पाते। 30 प्रतिशत बच्चे पांच–छह साल की स्कूली पढ़ाई के बावजूद सामान्य जोड़–घटाव भी नहीं जानते। ग्रामीण महिलाओं की हालत और भी बुरी है। अच्छे नंबर लाने वाले विद्यार्थियों के साथ भी कई मायनों में ऐसा ही है। वे व्यावहारिक शिक्षा के मामले में कहीं नहीं ठहरते। उनकी तथाकथित कामयाबी रट्टामार व्यवस्था के कारण है। ऐसा होते हुए भी हम अच्छी शिक्षा का दंभ भरें तो यह मजाक ही है।

देश का विशाल मध्यवर्ग सरकारी स्कूलों की ओर झांकना भी नहीं चाहता। सरकार भले मान रही हो कि वह एजुकेशन के मोर्चे पर काफी खर्च कर रही है, लेकिन ऐसा है नहीं। जैसे–जैसे भारत वैश्वीकरण की ओर आगे बढ़ा, सरकार शिक्षा को लेकर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ती गई। 1990 में भारत शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का चार प्रतिशत खर्च करता था जो घटते–घटते आज 3 दशमलव 5 पर आ टिका है। कोठारी आयोग के अनुसार यह राशि छह प्रतिशत तय की गई थी। गौर करने वाली बात है कि यूनेस्को का सुझाव है कि 2015 और इसके बाद की योजनाओं पर सरकार को कुल सरकारी खर्च का 20 प्रतिशत हिस्सा खर्च करना चाहिए। यहां इस तथ्य पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि अब सरकार शिक्षा पर जो राशि खर्च करती रही है उसमें भी क्षेत्रीय विषमता दिखती है।

शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण के बढ़ते दखल ने वंचित और दलित तबकों की शिक्षा पर सबसे ज्यादा असर डाला है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश के कुल 18 प्रतिशत छात्र ही 12वीं कक्षा तक पहुंच पाते हैं। दलित और आदिवासी छात्रों के मामले में यह प्रतिशत क्रमशः आठ और छह है। अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग के छात्रों में यह प्रतिशत 10 है। ऐसी भयावह स्थिति तब है जब सरकार शिक्षा के क्षेत्र में अपना व्यापक आधार मुहैया कराए हुए है। जो 18 प्रतिशत बच्चे बारहवीं तक पहुंच रहे हैं, उनकी संख्या और घटेगी। कारण उनमें से जो पैसे वाले होंगे निजी शिक्षण संस्थानों का भार वे ही उठा पाएंगे। मैं बार–बार पैसे वालों की शिक्षा–और गरीबों की शिक्षा पर इसलिए फोकस कर रहा हूं कि आने वाले दिनों में यह समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा बनने वाला है। आखिर जो लाखों खर्च कर नौकरी पाएंगे, वे इसे वसूलना भी तो चाहेंगे।

आगे ऐसी व्यवस्था को बढ़ावा न मिले इसके लिए जरूरी है कि मौजूदा सरकार समान स्कूल व्यवस्था की नीति अपनाए। हमारे संवैधानिक मूल्य भी इस बात पर फोकस करते हैं कि सबको समान शिक्षा मिले। अतीत में और आज भी जिन देशों ने इसे अपनाया, वहां बौद्धिक–शैक्षणिक तरक्की अधिक देखी गई है। अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, जापान जैसे पूंजीवादी देशों ने भी इसी व्यवस्था को अपनाया हुआ है। शायद उदारीकरण के बाद हम इस राह पर चले होते तो कोई रिपोर्ट हमारे मुंह पर तमाचा मारने की स्थिति में नहीं होती। वहां नंबरों की मारकाट नहीं होती और न ही प्रतिभा का आकलन नंबरों के आधार पर किया जाता।

– (लेखक जाने–माने शिक्षाविद हैं)

राष्ट्रीय सहारा से साभार

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने 200 बच्चों को बांटे फलदार व छायादार पौधे

वृक्ष हमें परोपकार सिखाते हैं

– स्वामी आर्यवेश

पेड़ हमारी निःस्वार्थ भाव से सहायता करते हैं, इनकी देखभाल हमारा दायित्व बनता है। उपरोक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने राजकीय कन्या प्राथमिक स्कूल काकड़ौली हुक्मी में पौधा वितरण समारोह के दौरान कही।

विद्यालय प्रभारी संदीप कुमार ने बताया कि ग्रामीण लाइब्रेरी बिलावल के सौजन्य से एक छात्र एक पेड़ मिशन के अंतर्गत पौधा वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य विशेष रूप से उपस्थित रहे। पौधा वितरण के पश्चात स्वामी आर्यवेश जी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी हमारा दायित्व बनता है। प्रत्येक छात्र को एक पेड़

लगाने के साथ ही उसको बड़ा होने तक पोषित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वृक्ष हमें परोपकार का संदेश देते हैं। हमें जीवन पर्यन्त कम से कम एक पेड़ का संरक्षण करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन हरपाल आर्य द्वारा किया गया।

ग्रामीण लाइब्रेरी बिलावल के संयोजक व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के कोषाध्यक्ष श्री हरपाल आर्य ने बताया कि ग्रामीण लाइब्रेरी द्वारा निरंतर निःशुल्क पौधा वितरण का कार्य करवाया जा रहा है। अभी बरसात के मौसम में खंड के अन्य स्कूलों में भी ग्रामीण लाइब्रेरी की तरफ से पौधे वितरित किये जायेंगे। कार्यक्रम में छात्राओं को फलदार व छायादार कुल 200 पौधे वितरित किये गए। इस अवसर पर कार्यक्रम में सुखवंती, बाबूलाल जुई, नरेंद्र, बिजेन्द्र यादव, संजय यादव, सुरेन्द्र कुमार, देवानन्द आर्य आदि उपस्थित थे।

– कार्यालय सचिव, आर्य युवक परिषद हरियाणा

दुजाना में बेटी बचाओ जन–चेतना अभियान व्याख्यानमाला का 50वाँ कार्यक्रम

यज्ञ वेदी पर ली बेटी बचाने की प्रतिज्ञा

कुमारी पूनम आर्या ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रायः प्रत्येक विद्यालय में प्रार्थना के समय गायत्री मंत्र का उच्चारण कराया जाना चाहिए।

वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर के तत्वावधान में बेटी बचाओ जन–चेतना अभियान व्याख्यानमाला का 50वां कार्यक्रम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दुजाना में आयोजित किया गया। जिसमें यज्ञ व व्याख्यान कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता कुमारी पूनम आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान, यज्ञ के यजमान प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र, प्राध्यापक अजय कुमार एवं विद्यालय के छात्र–छात्राएँ रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष पंडित रमेश चन्द्र कौशिक ने की तथा मंच संचालन महेन्द्र सिंह शास्त्री द्वारा किया गया। यज्ञ का कार्यक्रम वैदिक मंत्रोच्चार से किया गया। मुख्य वक्ता कुमारी पूनम आर्या ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रायः प्रत्येक विद्यालय में प्रार्थना के समय गायत्री मंत्र का उच्चारण कराया जाता है। किन्तु इस मंत्र के अर्थ का मनन करना भी अति आवश्यक है और विद्यार्थियों को अर्थ सहित उच्चारण कराया जाये तभी सार्थक है। इस मंत्र के उच्चारण से मेधाबुद्धि प्राप्त होती है। गायत्री मंत्र योग है, तप है और सभी सिद्धियाँ इसके जाप से प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने कहा कि यह प्रकृति का नियम है कि जमीन में यदि बीज नहीं बोया जायेगा तो उस जमीन में घास–फूस और खरपतवार पैदा हो जाती है। इसलिए विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार देना बहुत जरूरी है। ताकि विद्यार्थियों के पढ़ाई के समय कुसंस्कार दिमाग में न उपजे, क्योंकि अच्छे संस्कारों के बिना जीवन सफल और महान नहीं बन सकता। बेटियों को पढ़ाना भी अति आवश्यक है ताकि वो स्वावलंबी बन सके और परिवार बेटी को भार न समझे। कुमारी प्रवेश आर्या संयोजक राष्ट्रीय बेटी बचाओ अभियान ने कहा कि बेटी के गर्भ में रक्षा और समाज में सुरक्षा देनी अति आवश्यक है, क्योंकि बेटी बचेगी तभी देश बचेगा। बेटियों के प्रति समाज की सोच बदलना भी अति आवश्यक है, क्योंकि बेटियाँ बेटों से कम नहीं है। प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में अर्जित किया हुआ ज्ञान जीवन पर्यन्त की पूंजी होती है। इस अवसर पर कन्या भ्रूण हत्या नहीं करने की प्रतिज्ञा भी सभी उपस्थित छात्र–छात्राओं व स्कूल के स्टॉफ को दिलाई गई। प्रतिभाशाली बेटियों को महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश व योगीराज श्रीकृष्ण के गीता उपदेश की पुस्तक देकर सम्मानित किया गया। समिति की ओर से पंडित जय भगवान आर्य, सुभाष आर्य, भगवान सिंह, ओम प्रकाश यादव, कृष्ण कुमार, कर्ण सिंह मौजूद रहे।

ARYA PRATINIDHI SABHA AMERICA

Congress of Arya Samajs in North America—Established in 1991

224 Florence, Troy, Michigan 48098, USA

www.aryasamaj.com | info@aryasamaj.com | fb.com/vedicamerica

Cordially Welcomes You to

27TH ARYA MAHA SAMMELAN

Annual International Conference of Arya Samaj Organizations

JULY 27-30, 2017

Long Island Marriott, Uniondale, New York, USA

Conference Hosted by

Dropadi Jigyasu Ashram, Flushing, New York

&

Arya Samaj Organizations of New York, New Jersey and Connecticut

***** CONFERENCE HIGHLIGHTS*****

Conference Theme:

"Vedic Dharma & Sanskriti"

*Interactive Seminars on Vedas
*Workshops on Vedic Literature
*World Renowned Vedic Scholars
*Daily Yog & Meditation Sessions
*Parallel Youth Program
*Cultural Programs

Aum Dhwaj Yatra

A Special (padd yatra) Parade for propagation of Vedic Dharma and the message of Arya Samaj

On Sunday, July 30th — 9:30AM, Flushing, New York

REGISTER ONLINE TODAY
www.aryasamaj.com/ams

Early Bird Registration Ends Soon

Adults: All Days / Couples - $400 / Singles - $250 / Adults 1 Day Only - $150
Youth: (Ages 5-25) - $150
Discounted Hotel Rates at Long Island Marriott: $ 159 per Night, (Limited Rooms Available)

For More Information, Please Contact:

Dr. Devbala Ramanathan
Dropadi Jigyasu Ashram
(718) 886-1525

Mrs. Jyoti Gandhi
Arya Samaj of New Jersey
(201) 818-0969

(Sammelan Co-Chairs)

Sh. Jethinder Abbi
Treasurer, APSA
(914) 393-8268

Behan Sati Gurdial
Joint Treasurer, APSA
(631) 512-3778

(Conference Co-Coordinators)

Sh. Vishrut Arya
President
(404) 954-0174

Sh. Bhuvnesh Khosla
General Secretary
(248) 525-9076

Pt. Vedabrat Etwaru
Joint Secretary
(201) 390-5741

Aryapathik Girish Khosla Vaanprasthi
Trustee
(248) 703-1549

Sh. Dev Mahajan
Member Emeritus
(713) 468-4339

(Executive Committee—Arya Pratinidhi Sabha America)

Sammelan Welcome Committee

Sh. Rahul Pandit
(917) 292-6070

Sh. Satish Arya
917-364-7273

Sh. Ranbir Kumar
347-665-7719

Dr. Dharamjit Kumar
917-617-0675

Dr. Ramesh Gupta
201-602-7576

Behan Davi Lakhnath
607-427-3662

Bhai Balram Rambrich
718-343-9647

Dr. Yashpal Arya
516-840-9810

For More Information, and Online Registration visit: www.aryasamaj.com/ams

(347) 770-2792 | mahasammelan@gmail.com | fb.com/vedicamerica

Discounted Early bird Registration For Limited Time Only

पृष्ठ–1 का शेष

हरियाणा के ऐतिहासिक स्थल लौहारु में लगभग पांच हजार युवक व युवतियों ने लिया संकल्प

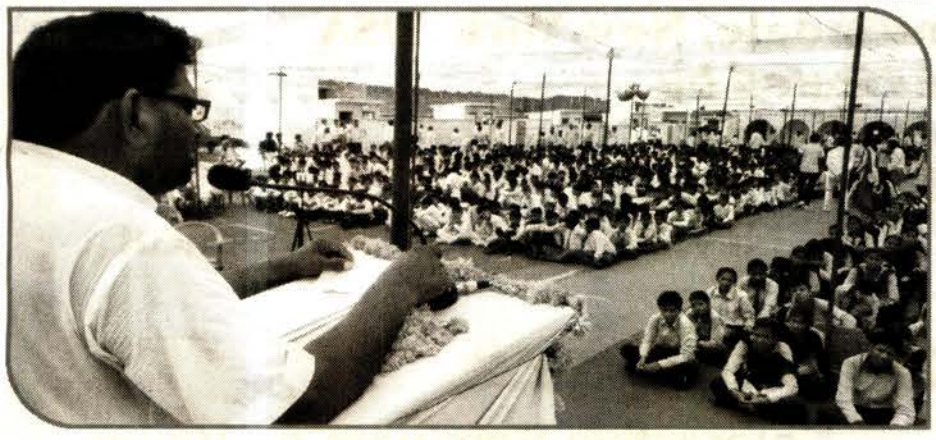

स्वामी आर्यवेश जी ने संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चों को केवल साक्षर बनाती है। उन्हें संस्कार देने का कार्य नहीं करती। उन्होंने कहा कि छोटी उम्र के बच्चों में जैसे संस्कार डाले जायेंगे उनका भविष्य एवं व्यक्तित्व वैसा ही बन जायेगा। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्दिष्ट सोलह संस्कारों को आचरण में लाने पर बल दिया। स्वामी जी ने छात्र–छात्राओं का आह्वान किया वे चरित्रवान, बुद्धिमान, परोपकारी तथा बलवान बने। साथ ही साथ अच्छे इन्सान भी बनें। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे चरित्रवान बनकर नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या व अश्लीलता के विरुद्ध मजबूती के साथ खड़े हों तथा सात्विक भोजन नियमित एवं अनुशासित दिनचर्या जैसे पवित्र विचार जीवन में अपनायें। स्वामी जी ने कहा कि जो बच्चे एक निश्चित लक्ष्य लेकर आगे बढ़ते हैं और भरपूर परिश्रम करते हैं वे सफलता को प्राप्त होते हैं तथा समाज और देश की उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी शक्तिपाल आर्य ने कहा कि आज जरूरत है कि स्कूल–कॉलेज में विद्यार्थियों को संस्कारित किया जाए। उन्होंने कहा कि सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि पांच यम नियम ऐसे हैं, जिनका हर धर्म के व्यक्ति को पालन करना चाहिए।

आर्य समाज के वरिष्ठ भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य ने पाखंड व कन्या भ्रूण हत्या की समस्या पर गीत व उपदेश प्रस्तुत किया। इस मौके पर स्वामी आर्यवेश जी बीईओ शक्तिपाल आर्य ने त्रिवेणी लगाई और 100 पौधे वितरित किए। प्रवक्ता जयवीर मान ने मंच का सुंदर सञ्चालन किया। कार्यक्रम का संयोजन मास्टर रामवतार आर्य, राजेश डांगी, पीताम्बर शर्मा,आदि ने किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि आज के वैज्ञानिक युग में युवाओं को सही दिशा देना आवश्यक है। यदि इस उम्र में युवाओं को संभाला नही गया तो इसके दूरगामी परिणाम भयानक होंगे। इसी स्थिति को देखते हुवे आर्य युवक परिषद द्वारा युवा निर्माण अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने सभी से युवा संस्कार निर्माण अभियान को तेज करने का आह्वान भी किया।

इस अवसर पर आयोजकों द्वारा स्वामी आर्यवेश जी, राजस्थान में आर्य नेता धर्मपाल एडवोकेट, बिरजानंद एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य, भजनोपदेशक रामनिवास आर्य आदि को शॉल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में खण्ड के लगभग सभी गावों के राजकीय विद्यालयों व निजी विद्यालयों से लगभग पांच हजार छात्रों व छात्राओं ने शिरकत की। राजकीय विद्यालयों के अतरिक्त निजी स्कूलों में मुख्य रूप से एम डी पब्लिक स्कूल बरालु, विवेकानंद वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लौहारु, ज्ञानकुंज, ठुकराल स्कूल, आइडियल स्कूल, शिव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,शिक्षा विकास आदि शामिल रहे।

समाज सेवी रमेश कौशिक ने सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की।

इस अवसर पर किसान नेता, रामपाल शास्त्री, अंतर्राष्ट्रीय स्काई डाइवर पूर्व एन एस जी कमांडो भाई अजय आर्य, रामचन्द्र एडवोकेट खेतड़ी, बाबूलाल आर्य, प्रवक्ता सजंय सैनी, डीपी रविंद्र सिंह, सुमन, प्रवक्ता सुनीता रानी, रेखा, एडवोकेट अशोक आर्य, धर्मबीर शास्त्री प्रधान लौहारु आर्य समाज, रामअवतार आर्य, जयवीर मान, राजेश डांगी , अजय शास्त्री भांडवा, जितेंद्र भारद्वाज, सुशील शर्मा, नरेश, पवन सुहासड़ा, विनोद बॉक्सर,आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम की लाइव कवरेज मिशन आर्यावर्त के द्वारा की गई । जिसमें दीक्षेन्द्र आर्य के साथ नरेंद्र आर्य व देवानंद आर्य ने जिम्मेदारी संभाली।।

कार्यक्रम बेहद सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के पश्चात स्वामी आर्यवेश जी के साथ सैकड़ों विद्यार्थियों व अध्यापको ने फोटो बनवाए।

– रामवतार आर्य, संयोजक,
संस्कार संकल्प समारोह

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है
आर्य समाज आदर्शनगर में गरीब परिवारों को 2.50 लाख का राशन वितरित

जयपुर : आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर हमेशा ज्ञान के साथ कर्म पर बल देता है। महर्षि दयानन्द के उपदेश सत्कर्म के लिए प्रवृत्त करने के लिए होते थे। महर्षि ने संसार को आर्य बनाने के लिए 10 नियम दिये। अधिकांश आर्य समाजियों को ये 10 नियम भी कंठस्थ नहीं हैं। आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर के प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी हमेशा इस बात पर बल देते हैं कि ज्ञान को कर्म में परिणत करो। **ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हो, इच्छा क्यों हो पूरी मन की एक दूसरे से न मिल सकें यह विडम्बना है जीवन की – एक दूसरे से न मिल सकें यह विडम्बना है जीवन की।** 20वीं शताब्दी के प्रथम तीन दशकों में जहाँ भी प्राकृतिक आपदा होती थी वहीं आर्य समाज पीड़ित परिवारों की मदद के लिए सबसे आगे रहता था। लाला लाजपत राय के नेतृत्व में अर्जुनसिंह, भगत सिंह के पिता किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह प्राकृतिक आपदाग्रस्त क्षेत्रों में जाते थे और पीड़ित परिवारों की सहायता करते थे। राजस्थान में भी जब अकाल पड़ा तब लाला लाजपत राय के कार्यकर्ता आए और अनाथ बच्चों को लेकर लाहौर गए। लाहौर का सारा प्लेटफार्म उनके स्वागत के लिए लाखों नर–नारियों से भरा हुआ था। आर्य समाज के परोपकार के कार्यों ने आर्य समाज को यशस्वी बनाया। इसी भावना से प्रेरित होकर आर्य समाज के प्रति समर्पित रवि नैयर ने सर्वमंगल सेवा समिति का गठन किया और वे अत्यन्त गरीब परिवारों को 25 लाख रुपये का एक वर्ष में राशन बांटते हैं। राशन के लिए आए हुए व्यक्तियों को वे खाना भी खिलाते हैं और आने–जाने का किराया भी देते हैं। असहाय बुजुर्गों को दूध के लिए पैसे देते हैं और इन गरीब परिवारों के बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिए स्कूल और कॉलेजों में फीस भी देते हैं। सर्वमंगल सेवा समिति के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य आर्य समाज से प्रेरित हैं और प्रतिदिन सायंकाल यज्ञ करने आते हैं। इस वर्ष उन्होंने निर्णय लिया कि गरीबों को यह राशन आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर के प्रांगण में वितरित किया जायेगा ताकि लोगों को इस बात का ज्ञान हो कि संसार का उपकार करना आर्य समाज मुख्य उद्देश्य है।

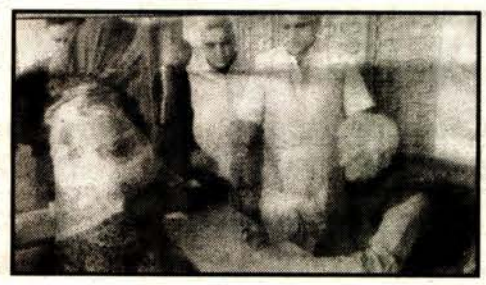

वैदिक सार्वदेशिक के सुधी पाठकों तथा एजेंटों की सेवा में

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका का आजीवन सदस्यता शुल्क 2500/– रुपये तथा वार्षिक शुल्क 250/– रुपये है। जो महानुभाव एक साथ में 10 (दस) नये सदस्य बनाकर शुल्क राशि, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के कार्यालय में भेजेंगे, उन महानुभावों को ग्याहरवें सदस्य के रूप में "वैदिक सार्वदेशिक" साप्ताहिक पत्रिका निःशुल्क भेजी जायेगी। आर्य समाज के सिद्धान्तों मन्तव्यों के प्रचार–प्रसार तथा आर्य समाज की गतिविधियों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए वैदिक सार्वदेशिक के अधिकाधिक ग्राहक बनाकर अपना सहयोग प्रदान करें।

– सम्पादक

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, उड़ीसा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर

एक निवेदन

मान्यवर!

पश्चिम ओडिशा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष चल रहा है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आर्यों का तीर्थ स्थल संस्कृति एवं संस्कार की रक्षा भूमि गुरुकुल आमसेना की स्थापना मार्च माह 1968 में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने की थी। स्थापना का वह समय इस क्षेत्र के सुदिनों के आरम्भ का समय था। विकट परिस्थितियों में स्थापित यह संस्था इस क्षेत्र की ही नहीं अपितु पूर्वोत्तर भारत की सर्वाधिक प्रशंसित एवं समाजसेवा में अग्रणी संस्था है। हजारों ब्रह्मचारियों ने यहाँ शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज की जो बहुमूल्य सेवा की उसका आंकलन हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। भारतभर में फैले आर्य जगत के समस्त समाजोपयोगी कार्यों तथा नागालैण्ड से लेकर राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तक फैली समस्त आर्य संस्थाओं में गुरुकुल के स्नातक समाज सेवा का अनूठा कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व जितना महान होता गया संस्था के कार्य भी उसी प्रकार विस्तारित होते गये।

सत्वे सिद्धिः भवति महतां नौपकरणैः।

स्वल्प साधनों के साथ आरम्भ हुई संस्था आज सर्वसाधनों से सम्पन्न, योग्य आचार्यों, कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, उपदेशकों की कर्मभूमि है। संस्था के कार्यों का विस्तार इस प्रकार हुआ कि 18 अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना स्वामी जी महाराज के कर–कमलों द्वारा नागालैण्ड, आसाम, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि प्रदेशों में हुई है।

समाजसेवा के प्रकल्पों में 100 बिस्तरों सहित आधुनिक चिकित्सालय, औषधालय, आयुर्वैदिक फार्मेसी, कृषि फार्म्स, बागवानी, साहित्य प्रकाशन विभाग, अन्न वितरण, वस्त्र वितरण, प्रचार विभाग, कन्या महाविद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में कन्या छात्रावास, गौसेवा केन्द्र, शुद्धि विभाग सहित आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन परम्परा के विद्यालयों की स्थापना प्रमुख हैं।

50 वर्षों के सिंहावलोकन के इस पुनीत अवसर पर आप संस्था के सहयोगीजनों को आमंत्रित करते हुए हमें हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। आपका आगमन इन कार्यों एवं ऋषि परम्परा के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा का द्योतक है। अभी से अपनी दैनन्दिनी में ये तिथियाँ लिख लीजिए। **23 दिसम्बर, 2017 से 25 दिसम्बर, 2017 तक आपका सादर निमंत्रण है।**

आइये! समस्त विश्व के आर्यबन्धु इस महान अवसर के साक्षी बन स्वर्ण जयन्ती उत्सव को सफल में अपना योगदान करें। आपके आगमन की प्रतीक्षा रहेगी। अपनी संस्था एवं इष्ट मित्रों सहित जरूर पधारियेगा। कुम्भ की शोभा बढ़ेगी, ऋषि परम्परा बढ़ेगी, ऋषि दयानन्द जी के स्वप्न साकार होंगे। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आपको स्नेह सहित निमंत्रण भेज रही है।

दर्शनाभिलाषी

माता परमेश्वरी देवी	स्वामी व्रतानन्दसरस्वती	रुद्रसेन सिन्धु	सुरेश अग्रवाल	डॉ. पूर्ण सिंह डबास आचार्य वीरेन्द्र कुमार
प्रधाना	आचार्य	उपप्रधान	उपप्रधान	वरिष्ठ संरक्षक मंत्री

गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, जिला–नवापारा, उड़ीसा–766109, मो.:–09437070541/615, 7873111213

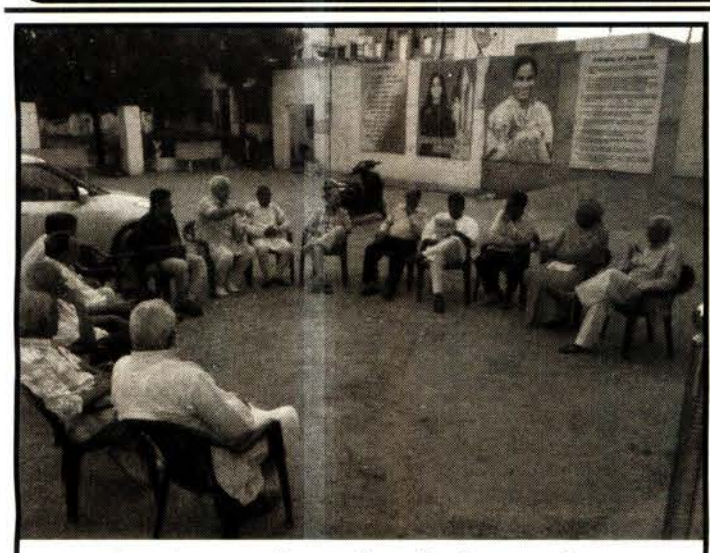

राजस्थान के जयपुर में सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी से अमेरिका जाने से पूर्व विचार विमर्श करते हुवे स्वामी आर्यवेश जी साथ हैं बिरजानंद जी व अन्य आर्यगण

जयपुर में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ता प्रो. विनोद आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रणजीत कौर (उदघोषक) कनेडा रेडियो स्टेशन व बिरजानंद जी स्वामी आर्यवेश जी के साथ।।। विदित हो कि स्वामी जी का कनाडा रेडियो स्टेशन पर आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य विषय पर लाइव कार्यक्रम भी प्रसारित किया गया था।।

सोनीपत में नामकरण संस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया गया

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री व आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कोषाध्यक्ष आजाद सिंह बांगड़ के बड़े सुपुत्र मनेंद्र बांगड़ के जुड़वा बच्चों का नामकरण संस्कार दून स्कूल सोनीपत में स्वामी आर्यवेश जी ने करवाया। बेटी का नाम 'आव्या' व बेटे का नाम 'मानवेन्द्र सिंह' रखा गया। इस अवसर पर उपस्थित होकर प्रिं. आजाद सिंह बांगड़, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री बलराम आर्य, श्री राजेन्द्र चहल, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री नरेश शर्मा व प्रवीण आर्य, प्रो. सत्यपाल जी, प्राचार्य श्री विकास दहिया, चौ. धज्जाराम कालेज बुटाना, मुख्याध्यापक श्री विनोद लायल जी, श्री अजमेर जी, प्राचार्य शिव मार्डन स्कूल सोनीपत, श्री राजेन्द्र गाल्हान, प्राचार्य इण्डियन मार्डन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत, श्री दिलीप सिंह राणा, श्री राज सिंह राणा, श्री ईश्वर सिंह तहलान, प्रबन्धक सविता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत, श्री भौम प्रकाश दलाल सेवानिवृत्त एस.डी.ओ. श्री ओम प्रकाश वामल, श्री त्रिपुरारी जी एडवोकेट, श्रीमती सुनीता रानी, श्रीमती अनिता, श्रीमती सविता, श्रीमती मूर्ति, श्रीमती अनिला, श्रीमती प्रोमिला, श्रीमती नीतू, कुमारी मन्जू, कुमारी ऊक्षीसी, श्रीमती सन्तोष तथा श्री अंकित बांगड़ के अतिरिक्त सैंकड़ो आर्य जनों ने आशीर्वाद दिया।

बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ता विनीता आर्या के नवजात शिशु को आशीर्वाद देने पहुंचे स्वामी आर्यवेश जी, इस अवसर पर श्री रणबीर सिंह, श्री अजय सिंह, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या एवं ज्योति आर्या भी उपस्थित रहे

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 21–22 जुलाई, 2017
प्रकाशन की तिथि : 20 जुलाई, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
20 से 26 जुलाई, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

अमेरिका के न्यूयार्क में होने वाले 27वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए इंटरनेशनल एयरपोर्ट दिल्ली से रवाना होते हुए
सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी,
सार्वदेशिक सभा के यशस्वी महामंत्री प्रो विट्ठलराव जी तथा
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के महामंत्री श्री बिरजान्द जी

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

वैदिक विद्वान, शिक्षाविद् डॉ. धर्मपाल आर्य जी को सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अर्पित की विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य समाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा डॉ. धर्मपाल आर्य जी का नाम – स्वामी आर्यवेश

सौम्य व्यक्तित्व व शील स्वभाव के धनी स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रति समर्पित विख्यात आर्य नेता तथा शिक्षाविद् डॉ. धर्मपाल आर्य जी का गत् 9 जुलाई, 2017 को अकस्मात निधन हो गया। उनकी स्मृति में 16 जुलाई, 2017 को सायं 4 से 5 बजे तक वार्ष्णेय धर्मशाला, शालीमारबाग, दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उनके पारिवारिकजनों के अतिरिक्त प्रतिष्ठित राजनेता, विद्वान्, संन्यासी, आर्य समाजों तथा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मुख्यरूप से विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी, श्री एस. पी. सिंह जी सूरजमल इंस्टीट्यूट के चेयरमैन, दिल्ली पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, एम.डी.एच. के मालिक महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, मंत्री श्री विनय आर्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से पधारे प्रोफेसर व आचार्यगण, स्वामी सोम्यानन्द, श्री मूलचन्द गुप्ता, श्री बिजेन्द्र शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य अमरदेव शास्त्री, श्री के.के. सेठी, श्री अमित मान सहित अनेकों प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर वक्ताओं ने अपनी–अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. धर्मपाल जी को मृदुभाषी, परोपकारी, सहयोगी, मिलनसार, सौम्य स्वभाव से युक्त आर्य समाज के लिए समर्पित आर्य नेता तथा शिक्षाविद् बताया एवं उनके द्वारा किये गये सामाजिक, शैक्षिक तथा वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के प्रचार–प्रसार हेतु किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला।

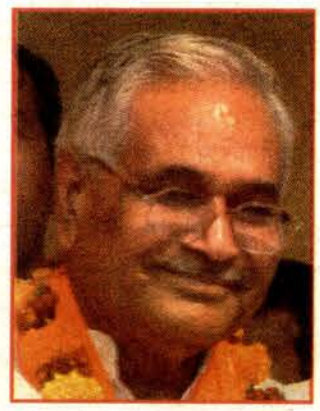

इस अवसर पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि डॉ. धर्मपाल जी अप्रतिम विद्वान, सिद्धहस्त लेखक, जिज्ञासु गवेषक, कुशल वाग्मी, शिक्षाविद् के साथ–साथ चिन्तनशील सम्पादक भी थे। उन्होंने अनेकों पुस्तकें भी लिखीं। दिल्ली विश्वविद्यालय में आपकी हिन्दी के प्रति सेवाओं तथा आर्य जगत में अपनी कर्त्तव्यनिष्ठ भूमिका के कारण आपको गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का कुलपति बनाया गया। जहाँ आपने अपने कुशल प्रशासन, कर्मठता, नीतिकुशलता तथा अपने सौम्य व्यवहार से गुरुकुल कांगड़ी की सर्वतोमुखी उन्नति में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. धर्मपाल जी के जाने से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम सब आर्यजन उनके व्यक्तित्व, कृतित्व से प्रेरणा लेते हुए आर्य समाज को शिखर पर ले जायें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के इतिहास में डॉ. धर्मपाल आर्य का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि हम सभी को जीवित श्राद्ध की परम्परा शुरू करने का संकल्प लेना चाहिए। इसी प्रकार दिवंगत आत्मा के जीवन से प्रेरणा भी लेनी चाहिए।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने डॉ. धर्मपाल जी को आर्य समाज का एक समर्पित विद्वान बताया।

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने डॉ. धर्मपाल जी के असामयिक निधन से आर्यों को सबक लेने की सलाह दी।

डॉ. अनिल आर्य ने अपने श्रद्धांजलि में डॉ. धर्मपाल को युवाओं का प्रेरणा स्रोत बताया।

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने डॉ. धर्मपाल जी के निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया।

डॉ. योगानन्द शास्त्री ने डॉ. धर्मपाल जी के निधन को समाज और राष्ट्र की महान क्षति के रूप में प्रकट किया।

स्व. डॉ. धर्मपाल जी के सुपुत्र श्री विनीत व वीवत्स्वत ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया और स्वामी अग्निवेश जी सहित सभी संन्यासियों एवं विद्वानों ने डॉ. धर्मपाल की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा जी को पूर्ण सांत्वना देकर ढांढस बंधाया।

इस अवसर पर दिल्ली के आर्यनेता वैद्य इन्द्रदेव आर्य, आर्य पुरोहित सभा के महामंत्री डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य, आचार्य अखिलेश्वर, योगाचार्य आचार्य सत्यवीर, श्री आदित्य आर्य, आर्य समाज दीवान हाल के मंत्री मेजर रविकान्त आर्य, श्री नाहर सिंह वर्मा, श्री ऋषिपाल शास्त्री, श्री दुर्गेश आर्य, बहन पूनम एवं बहन प्रवेश आर्या, स्थानीय पार्षद रेखा गोयल, डॉ. जयदेव वेदालंकार हरिद्वार, श्री प्रद्युम्न शास्त्री पुरोहित आर्य समाज शालीमार बाग, श्री नरेन्द्र आर्य मंत्री आर्य समाज शालीमारबाग स्थानीय आर्य समाज के सभी अधिकारी एवं सदस्यगण तथा महिला समाज के सभी अधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित थे। उन्होंने भी डॉ. धर्मपाल जी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने श्रद्धांजलि सभा का सुचारू रूप से संचालन किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।